

Class - B.A. Part - I

Sub - Hindi (Hon) Paper - I

Written by Raushan Kumar

R.B.L.R. College Mahabubnagar

① जैन साहित्य के काव्य वैशिष्ट्य का
उल्लेख करें

उत्तर- जिस प्रकार हिन्दी के पुरानी
क्षेत्रों में सिद्ध ने बौद्ध चर्म के
वप्रयान मत का उच्चार हिन्दी कविता
के माध्यम से किया, ठीक उसी
प्रकार पश्चिमी क्षेत्र में जैन साधुओं
ने अपने मत का उच्चार हिन्दी
कविता के माध्यम से किया।
इन कवियों की स्वनारु आचार राम,
पागु, चरित आदि विभिन्न शैलियों
में मिलती हैं। आचार शैली के
जैन काव्यों में घटनाओं के स्थान
पर उपदेशात्मकता की प्रधानता की
गई है। पागु और चरितकाव्य
शैली की सामान्यता के लिए प्रसिद्ध
है। रास शब्द संस्कृत में पीठ
और नृत्य के लिए प्रयुक्त किया
जाता था। भगवद्गीता ने इसे पीठ -
नीयक कहा है। वात्स्यायन के
कामसूत्र के स्वनारुतक रास
में गायन का भी समावेश हो
गया था। अग्निवर्गुप्त ने रास को
एक प्रकार का रूपक माना था।
लेकिन जीवन में श्री कृष्ण की विलक्षण
के लिए रास शब्द खूब ही गाय
था। और आज भी सामान्य जनता
इसका इसी अर्थ में प्रयोग करती
आ रही है। जैन मंदिरों में रास

लोग रात्रि के समय रास गाधन करते थे। अतः — जैन साहित्य का सबसे लोकप्रिय रूप रास बन गया।

आदिकालीन हिन्दी जैन साहित्य के काव्य वैशिष्ट्य का निम्न रूप से परिचय दिया जा रहा है।

श्रावकाचार — देवसेन नामक प्रसिद्ध जैन कवि ने 933 ई. में इस काव्य की रचना की थी। श्रावकाचार में 280 दोहों में श्रावक धर्म का प्रचार-प्रसार किया गया है। कवि ने गृहस्थ के कर्तव्यों पर भी विस्तार से विचार किया है। इसकी रचना दोहा छंद में प्रसार है। एक उदाहरण इस प्रकार है।

॥ जो जिण सायण अभियउ सो भइ कटियउ साख ।
जो पालइ सउ आउ करि सो सखि पावउ पाख ॥ ७
इन प्रसिद्धियों में कवि की कल्पना एवं काव्य सोच्छव लाजवाब है।

भारतेश्वर बाहुवली रास — इस ग्रंथ की रचना 1184 ई. में शालीभद्र मुरि ने की। इस ग्रंथ में भारतेश्वर और बाहुवली के प्रचरित्रों का वर्णन किया गया है। इस ग्रंथ में कीर और धर्म का निवेदन रूप में हुआ है। 205 द्वंद्वों में रचित इस ग्रंथ का संस्कार है। इसमें

इसकी भाषा में नाटकीयता, उत्तिवैचित्र्य,
तथा रसात्मकता के सर्वत्र दर्शन
होते हैं। एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

“ कोयल कलवली चलवत
लोह खरि तउ गरवीउ कृत,
चक्र सारिसउ चुनउ करउ
शङ्खउ कोलउ कुल सरहुउ, उ
चक्रवाला रास — यह पौलीरा
हैदो का एक लघु खंडकाव्य है।
इसकी रचना 1900 ई. के आसपास
आसग कवि ने की थी। इसकी
कथा नायिका चंपनलाला पर आधारित
है। इस काव्य में भाव-सौंदर्य
के चित्रित चित्र इसके रचयिता
ने अंकित किये हैं। सभी
इसकी काव्य निष्ठा व्यंजित है।
रेवतगिरि रास — इस काव्य
की रचना 1931 ई. में विजयराज
सरि ने की। इसकी कुछ पंक्तियाँ
द्रष्टव्य हैं -

“ कोयल कलवली गौर केकराओ
समरु गहसर गहर गुंजराओ,
जलद जल बंवाले रिशरणि खाउल
रेहइ,
उज्ज्वल सिहरउ अलि कुंवल, समाल, उ
इन पंक्तियों में प्रकृति
के सामाजिक चित्र इस काव्य
भाव तथा कलापक्ष को सुगार करती
है, यात्रा तथा मूर्ति स्थापना की घटनाओं
पर आधारित यह रास वस्तुतः कलात्मक
सौंदर्य का भी आच्छादन प्रस्तुत करता है।
स्पष्टतः कहा जा सकता है कि
भाषा सौंदर्य, शुद्ध योजना, अलंकार योजना
आदि की दृष्टि से यह काव्य विशिष्ट है।